ताई और वन्यजीव संरक्षण

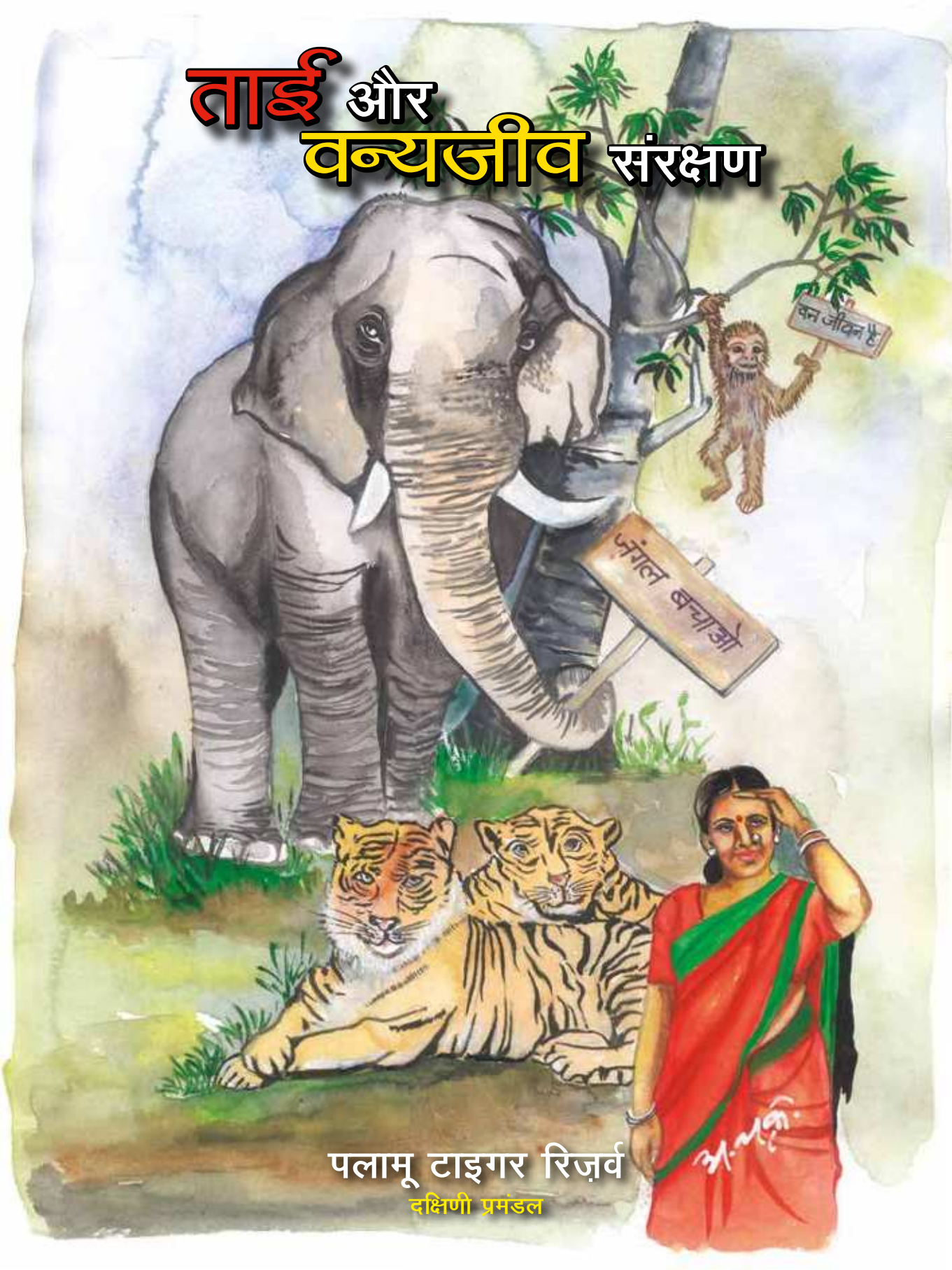

पलामू टाइगर रिज़र्व

दक्षिणी प्रमंडल

प्यारे पाठको के लिए संदेश

प्यारे नन्हें मित्रों,

सभी को नए साल की शुभकामनाएँ।

पिछले अंक में हम नें आप सभी को जंगल में लगने वाली आग से होने वाली क्षति के बारे में बताया था। आशा है आप सभी अपने आस पास के जंगल-पेड़ों को आग से बचाने में अपना सहयोग दे रहे होंगें।

इस अंक में हम जंगल में रहने वाले जीव-जन्तुओं की सुरक्षा के बारे में जानेंगें। आप सभी को यह जान कर आश्चर्य होगा कि हम मनुष्यों का अस्तित्व जीव-जन्तुओं के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यहाँ तक कि एक छोटी सी मधुमक्खी के विलुप्त हो जाने से इस पृथ्वी पर मानव जीवन समाप्त हो सकता है। इसलिए वनों के साथ ही वन्यजीवों को बचाना भी अत्यंत ही आवश्यक है। हमारे संविधान के अनुसार वन्यजीवों की सुरक्षा करना हम सभी का मौलिक कर्त्तव्य भी है।

वन्यजीवों के अवैध शिकार, उनके रहने के जंगल उजड़ जाने, जलवायु परिवर्तन के कारण जीव-जन्तुओं की कई प्रजातियाँ इस पृथ्वी से पूर्णतः विलुप्त हो चुकी हैं, जैसे कि डोडो पक्षी, सुमात्रा के बाघ, सफेद गैंडे, पैसेंजर कबूतर इत्यादि। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार निकट भविष्य में पूरे विश्व भर में लगभग 10 लाख जीव-जन्तुओं की प्रजातियों के विलुप्त हो जाने की आशंका है। अवैध शिकार के कारण ही कभी काफी मात्रा में पाए जाने वाले बाघ की संख्या घट कर मात्र 1,100 हो गई थी, जिसे समय रहते उचित सुरक्षा देते हुए बचाया जा सका।

बाघ के अलावा भी कई ऐसी प्रजातियां हैं जिनका अवैध शिकार बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, जैसे कि, हाथी, तेंन्दुआ, भालू, वज्रकीट, छिपकली की प्रजातियां इत्यादि। इन शिकार के पीछे बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय गिरोह शक्रिय हैं, जो हमारे आस-पास के जंगलों से निर्दोष जानवरों का शिकार कर या आस-पास के लोगों को शिकार के बदले रूपयों का लालच दे कर जानवरों के अंग का अवैध व्यापार करते हैं।

हमारे इस अंक के माध्यम से सरकार ने आप सभी नन्हें पाठकों को इस विषय पर जानकारी देने का प्रयास किया है। आशा है कि आप सभी इससे सीख लेकर वन्यजीव संरक्षण में अपना सहयोग प्रदान करेंगें।

मुकेश कुमार
(भारतीय वन सेवा)
उप निदेशक, दक्षिणी प्रमंडल,
पलामू व्याघ्र आरक्ष, मेदिनीनगर।

ताई और वन्यजीव संरक्षण

ताई के लिए इस दिन खास होता है,कुछ नया होता है। इस दिन वे नयी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहती हैं।समाज की इस बुराई को मिटाने के लिए तत्पर दिखती हैं। इस दिन की भांति ताई सुबह छह बजे सो कर उठी थी।

ताई अपने खुले बालों को लपेट कर जूड़े में बदलती हुई बाथरूम फ्रेश होने चली गयी।

बाथरूम से लौट कर किचन में अपने लिए चाय बनाने चली गयी।

चाय का प्याला लेकर वे टेरिस पर आ गयीं।

मुहल्ले के बच्चे नवड़ के गेंद से पिट्ठो खेल,खेल रहे थे।

हंसते-खेलते बच्चों को देखती हैं तो वे बहुत खुश होती हैं।जीवन का सच्चा आनन्द बचपन में ही होता है। निस्वार्थ और निश्छल होता है बचपन। बचपन कुछ नया जानने का, कुछ नया करने का अवसान व प्रेरणा देता है।

खेलते-खेलते बच्चे अचानक सहम गये।
बगल की झाड़ी से एक सांप बाहर निकल आया था।

साँप देख कर बच्चे जोर-जोर से चिल्लाने लगे। उनकी आवाज सुनकर कुछ लोग अपने-अपने घरों से लाठी लेकर बाहर आये थे।

परिस्थिति को भांपते हुए ताई ऊपर से ही आवाज दी-

रुकिये , उसे मत मारिये....

मगन ताई....

?!

मैं आती हूं...

कहती हुई ताई सीढ़ी की ओर बढ़ती है।

तुरंत साँप वाली जगह पर पहुंच जाती हैं।

इस बेजुबान प्राणी को क्यों मार रहे हो? इसने तुम सब को कोई हानि पहुंचाई क्या ?

नहीं! लेकिन किसी को डंस लेगा.....

इसलिए उससे पहले हम इसे मार डालेंगे।
इतना निर्दयी मत बनो भाई।
तुम सबको जितना अपनी जिन्दगी से प्यार है,उतना ही इसे भी है। इसे भी जीने का अधिकार है। इससे जितना भय तुम सबके मन में है,उतना ही भय तुम सबसे इसके मन में भी है।
कोई भी जीव हो,वह अपनी रक्षा के लिए किसी पर आक्रमण करता है, या फिर भूखा होता है तब।
मात्र अपने शौक के लिए केवल मनुष्य ही शिकार करते हैं, अन्य जीव-जन्तु नहीं ।मनुष्य और अन्य जीव में यही अन्तर होता है ।
सांप एक मांसाहारी प्राणी है। चूहा,मेढ़क व अन्य हानिकारक कीड़े-मकौड़े खाकर सांप हमारी फसलों की रक्षा करते हैं। एक प्रकार से किसानों के सच्चे मित्र होते हैं सांप।
डर और अंधविश्वास के कारण लोग सांप को देखते ही मार डालते हैं,जो कि सरासर गलत कार्य है। इसके कारण सांपों की बहुत सारी प्रजातियां विलुप्त हो गयी हैं।

सांपों को लेकर हमारे देश में इतनी भ्रांतियां फैलायी गयी हैं कि मनुष्य सांपों के दुश्मन हो गये हैं....नाग को मार दिया जाये तो नागिन,या' नागिन को मार दिया जाये नाग बदला लेते हैं..... नाग-नागिन की आंखों में मारने वालों की तस्वीर छप जाती है.....क्या उनकी आंखों में कैमरा लगा हुआ है,उनकी आंखें प्रिंटिंग मशीन है?
बकवासों पर विश्वास कर के मनुष्य हत्यारा बन गया है और बनता जा रहा है......अभी तुम सब भी बनने जा रहे थे।
यही सर्प मंदिरों में दिख जाये तो तुम लोग दूध पिलाने के लिए कतारें बनाने लगते हो और बाहर दिखे तो लाठी मारने के लिए उठ जाते हो।अपने स्वभाव को बदलो।क्रूर मत बनो।
देखते ही देखते सांप पुनः झाड़ी में चला गया।
देखो......बिना कुछ किये ही अपनी जगह पर चला गया बेचारा मार्ग भटक गया था।
!?

यह तो संयोग था कि तुम लोगों को देख लिया और रोक लिया,वरना अनर्थ कर बैठते।

बिना सोचे-समझे आक्रामक फैसला नहीं लेना चाहिए।

अच्छा किया ,जो हमें गुनाह करने से रोक लिया....

ठीक है ताई ।

धन्यवाद ताई .... अब हमसे ऐसा नहीं होगा।

सब लोग अपने-अपने घर लौट गये। ताई भी अपने घर लौट आयी।

कुछ समय बाद ताई अपने कमरे में बैठकर डायरी में कुछ लिख रही थी कि अचानक उनकी दोस्त मांडवी का फोन आया था।

टीन

टीनिंग

टीन-टीन

हां मांडवी....बोलो..... बहुत दिनों बाद आज याद कैसे किया?

यार दरअसल आज पिकनिक जाने का मन कर रहा है,घर में सभी की इच्छा है ...तुम भी चलो न हमारे साथ,बड़ा मजा आयेगा।

ओ के..

उसका फोन रखी ही थी कि किसी और का फोन आ गया।ताई ने फोन उठाया तो उधर से आवाज आयी-

ताई मेरा नाम संजय है...कल शाम से मेरा बेटा लापता है,कृपया मेरी मदद कीजिए...

आप पुलिस में रिपोर्ट कीजिए ....वे लोग ढूंढ लेंगे।

पुलिस में रिपोर्ट कर दिये हैं, परन्तु कुछ नहीं हुआ अभी।

संजय भाईईई.....,
पुलिस वाले भी आदमी होते हैं ...उनके पास कोई अलादिन का चिराग तो है नहीं कि जमीन पर रगड़ते ही जीन्न प्रकट होकर पल भर में आपके बेटे को हाजिर कर देगा।

हां,वो तो सही है,पर पत्नी को कैसे समझाएं.... वह एक मां है और मां का हृदय.....

ठीक है हम आते हैं...

ताई बिना सोच-विचार किये संजय के घर के लिए स्कूटी से निकल गयी। जब बात किसी की संतान की होती है,तो ताई ऐसे मामले में विलम्ब नहीं करती ।

रास्ते में ताई को याद आया कि मांडवी उनका इंतजार कर रही होगी,इसलिए सड़क के एक किनारे स्कूटी रोक कर मांडवी को फोन की-
....मांडवी बुरा मत मानना मैं नहीं आ पाऊंगी। एक अर्जेंट काम निकल आया है,उसी के लिये जा रही हूं।
ठीक है।
थोड़ी ही देर में ताई संजय के घर पहुंच गयी थी।वहां गांव के कई लोग पहले से ही मौजूद थे।संजय की पत्नी रो-रो कर बेहाल थी।
मेरा बेटा ऽ ऽ....मेरा लाल....तू कहां चला गया....
उसकी स्थिति देख कर ताई विचलित हो गयी थी।संतान को खोना क्या होता है,उन्हें इस बात की समझ है। उनकी आंखें डबडबा गयी थी।
रोओ मत बहन.... रोने-धोने से कुछ नहीं होता.....

ताई को देखते ही संजय की पत्नी लपक कर उनके गले लग गयी थी।
ताईईईSSS....
....घबराओ नहीं.. हम लोग ढूंढने जाते हैं।
कहां ढूंढने जाईयेगा.....ई गांव जंगल के सीमा पर पड़ता है। कई बार जंगली जानवर इधर घुस आते हैं और आदमी एवं हमारे मवेशी को उठा ले जाते हैं।
इनके बच्चे को भी उठा ले गया होगा......ऐसी घटनाएं कितनी बार घट चुकी हैं।
आप चुप्प रहिए तो......आप से कोई सलाह नहीं मांग रहा...
हम जंगल के आसपास के एरिया में तलाशते हैं....मुझे विश्वास है बच्चा मिल जायेगा.....चलिए संजय भाई मेरे साथ...किसी वनकर्मी को भी साथ ले लेते हैं।
ऐसे जंगल बिना किसी वनकर्मी के सहयोग के नहीं जाना चाहिए। उनके मार्गदर्शन में किसी को कोई खतरा उठाना नहीं पड़ता।

रघुनंदन भईया को बुला लेते हैं .....चलिये आगे मिल जायेंगे।
हम भी चलेंगे...
आप कहां हमारे साथ चलिएगा ?
नहीं आप घर पर ही रहिए.... हम बच्चे को लेकर आते हैं.....
ताई सचमुच वह मिल जायेगा न?
हां...बिलकुल....हमेशा सकारात्मक सोच रखिये, सब अच्छा होगा।
ठीक है ताई।
ताई संजय के साथ जंगल की ओर निकल पड़ी थी।
ताई और संजय थोड़ी दूर चले ही थे कि ताई को कुछ एहसास हुआ। पके केले के गंध का एहसास। पके केले की गंध हवा में फैल रही थी। ताई इधर-उधर नजरें दौड़ा रही थी।
एक घर के सामने खड़ा होकर संजय ने आवाज लगायी-
रघुनंदन भईया .... ए रघुनंदन भईया....
नहीं हैं....जंगल ही गये हैं....

कुछ दूरी पर क्रॉस कर के बांधा हुआ दो बांस गड़ा हुआ था। उसे देखते ही ताई का माथा ठनका।
गड़बड़ ..... भारी गड़बड़ है।
संजय भाई क्या वहां बांस पर कुछ टंगा हुआ दिख रहा है ?
हां...कुछ है...
चलिए वहां.... देखते हैं....

ताई हम अपने बच्चे को ढूंढने निकले हैं, न कि जंगल की खोज-खबर लेने।
गजब के हैं आप संजय भाई...बीमारी का कारण जानने की कोशिश नहीं कर रहे हैं..... बीमारी का निवारण चाहते हैं। सचमुच बीमारी का स्थायी निवारण चाहते हैं, तो कारण जानना जरूरी है।

चलिए न वहां पहुंच कर देखते हैं
लगता है ताई का दिमाग घूम गया है.... हे भगवान कहां हम इस झिनझिनी औरत के चक्कर में पड़ गये।

ताई खूंटे की ओर बढ़ गयी थी। मंजय भी मन मार कर उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

यह केला नहीं है....साजिश है। जानवरों को फंसाने के लिए षड्यंत्र रचा गया है।पके केले की गंध हाथी, बंदर व अन्य जानवरों को अपनी ओर खिंचती है।

खूंटे को देख ताई चौंक गयी....खूंटे मे आधे दर्जन पके केले बंधे थे,जिसकी गंध हवा के माध्यम से दूर-दूर तक फैल रही थी।

खूंटे के समीप घास-फूस की नकली परत बनायी हुई थी। घास-फूस हटाने पर एक बड़ा सा गड्ढा दिखा था। ताई कुछ सोच ही रही थी कि मंजय गड्ढा देख का चौंक गया था। उसके बच्चे का एक पैर का जूता वहां पड़ा था।

ताई यह मेरे बेटे का जूता है। वह यहां आया था....

मंजय भाई,आप जाईए और जल्दी से पुलिस को लेकर आईए.....मामला बहुत गंभीर है।हम तब तक केले की गुत्थी सुलझाते हैं।

क्या मतलब ?

मतलब ये है कि यह जाल जानवर फंसाने के लिए बिछाया गया था और फंस गया अपका बच्चा.....वह नादानी वश केला खाने के लिए आया होगा।
हो सकता है..... पर वह गया कहां ?
यही तो पता लगाना है..... आप जल्दी से पुलिस को लेकर आईए।
ताई आपको अकेला छोड़ कर कैसे जाएं ?
आप यहां रह कर भी क्या कीजियेगा ? इसलिए जाईए जल्दी.....जैसी भी परिस्थिति होगी हम निपट लेंगे।
ताई फिर भी..... आप एक महिला हैं....
अपने हिसाब में ऐसे कचरे को जमा मत रखा कीजिए और रखते भी हैं, तो परोसा मत कीजिए.... समय आने पर आपको पता लग जायेगा कि हम क्या कर सकते हैं।अब जाईए वक्त नहीं है।

बेटे को पाना है तो इस हाल में पुलिस को लेकर ही आना.....
ठीक है ताई.... अभी जाते है।
बच्चे को इस घने जंगल में कहां ले जाया जा सकता है ? बहुत मुश्किल मामला है.....कहां ढूँढें ?
संजय चला गया था।ताई अपनी सूझ-बूझ से जंगल में चल रही साजिश की पड़ताल कर रही थी।
मां-बाप की लापरवाही से ही इस तरह की घटनाएं घटती हैं।
ताई पढ़ी-लिखी समझदार तो है ही,साथ ही साहसी और निडर महिला भी है।हीरालों के दल पर बहुत सारे काम को अंजाम देती रहती हैं।

जंगल और गांव के बीच में एक टूटा हुआ रास्ता
दिख रहा था। वहां,उस रास्ते पर किसी को घसीट कर ले जाने का
निशान था। ताई उस रास्ते पर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ने लगी थी।

वह रास्ता एक खंडहर तक जाकर खत्म होता था। ताई को जैसा
अंदेह था,वैसा ही प्रतीत हुआ।जली हुई बीड़ी के आठ- दस टुकड़े
खंडहर के आस-पास दिख रहे थे।

दुनिया में बहुत से स्वार्थी लोग
भरे पड़े हैं। प्रकृति के साथ
छेड़-छाड़ करने के बीक पाल कर रखते
हैं। अपने स्वार्थ के लिए हरे-भरे पेड़ों
को काटते हैं।बेजुबान जानवरों व पक्षियों
का शिकार करते हैं।

हाथी,बाघ,हिरण आदि को मारकर
उनके दांत एवं चमड़े की तस्करी करते हैं।

जंगलों की कटाई करना
जानवरों को फंसाना
उनकी तस्करी करना
हाथी दांत के लिए
हाथी को मारना

कई जानवरों के बच्चों व पक्षियों को पकड़ कर मार्केट को बेच देते हैं।किसी मां से उसके बच्चे को अलग करना बहुत बड़ा गुनाह है,लेकिन इन हैवानों को तनिक भी परवाह नहीं.....ईश्वर इसके लिए ऐसे लोगों को कभी माफ नहीं करेगा।

इनके गैंग में अच्छे-खासे परिवार से करे जाने वाले लोग शामिल होते हैं।इन्हें पकड़ना बहुत जरूरी है। ऐसे लोगों पर किसी को शक भी नहीं होता।इनके चेहरे पर से नकाब हटाना बहुत जरूरी है ।

ताई सोचते-सोचते खंडहर में घुस गयी थी।

आज इन पापियों के पाप का घड़ा भर गया है ।

बाप रे बाप ! अंदर गजब की व्यवस्था है!!

बाहर से खंडहर है, लेकिन अंदर से पूरी संसाधन युक्त मकान था,जिसमें अनेक कमरे थे।बरामदा था।

ताई अंदर हॉल में बहुत सतर्कता पूर्वक घुमी थी। हॉल के एक कोने में हाथी का एक बच्चा लोहे की चेन से बांध कर रखा गया था।

हे भगवान....इन्हें जानवर कहते हैं और जानवरों जैसा काम ये इन्सान करते हैं .तनिक भी दया-माया नहीं है इन्हें ।

हाथी का बच्चा भुखा था,मानों वह कुछ दिनों से खाया-पीया नहीं हो।पीपल की पत्तियां व पानी की बाल्टी उसके पास रखी हुई थी।

ताई इधर-उधर अपनी नजरें घुमा रही थी।अचानक उन्हें दूसरे कोने में कुर्सी पर बैठे दो व्यक्ति दिखे।दोनों अपने-अपने मोबाइल में डूबे हुए थे।एक जमीन पर लेटकर मोबाइल देख रहा था।
ताई धीरे-धीरे, दबे पांव एक कमरे में घुस गयी थी।जहां दो लड़का और एक लड़की को बंधक बना कर रखा गया था। तीनों नाबालिग थे।
ताई को देखते ही लड़की चिहुंकी थी-
ताई आ गयी। अब हम लोग मुक्त हो जायेंगे।
धीरे बोलो.....तुम सब के अतिरिक्त भी और कोई बंदी है ?
हां...बगल वाले कमरे में तीन थे दीदी और हैं।

पके केले की गंध आ रही है!
हां, मुझे भी लग रही है।
चलो, चल कर देखते हैं।
तुम लोग इनके चक्कर में कैसे फंस गये बेटी?
हमसब लुकाछिपी खेल रहे थे कि हमें केले की गंध लगी थी.....
फिर हम लोग केले ढूंढने निकले थे...और फंस गये इनके चक्कर में....
इन्हें छोड़ूंगी नहीं..... इसका मतलब है कि वन्यजीवों की तस्करी के साथ- साथ मानव तस्करी भी करते हैं।

मन तो कर रहा है कि इन दुष्टों को कच्चा चबा जाऊं...
कल सुबह-सुबह हम सब को दूसरी जगह ले जाया जायेगा। मोबाइल पर थोड़ी देर पहले किसी से बात कर रहे थे।
कोई बात नहीं बेटा,अब इनका खेल खत्म हो गया है। आज तुम लोग अपने-अपने घर पहुंच जाओगे और ये लोग जेल में...
अरे यार लगता है कि कोई अन्दर घुस आया है। चलो देखते हैं
हां चलो....
कौन हो तुम ?
तुम सबका काल!
काल नहीं , माल हो...., अभी पता चल जायेगा।
वह ताई की ओर लपका ही था कि ताई ने पलट कर जोरदार वार किया था।

बाप रे....तुम्हारा हाथ, या हथौड़ा मेरी मां। दिन में ही हमें तारे दिखा दी।
छठी का दूध भी याद दिलाऊंगी।
एक व्यक्ति कुल्हाड़ी लेकर ताई की ओर दौड़ा था कि ताई ने उसे भी धूल चटाई थी।
ये औरत है,या कयामत इसके घूंसे से तो अपना पूरा जबड़ा हिल गया यार।
हां यार....ऐसी खतरनाक औरत जीवन में पहली बार देख रहा हूं........
एक के बाद एक एक्शन ताई के द्वारा देखने को मिल रहा था।बच्चे हंस रहे थे। बदमाशों को मार पड़ रही थी और बच्चों को मजा आ रहा था।
ताई इन्हें और मारिए..... हमलोगों को ये बहुत मारे हैं...
तुम्हारे हर गुनाह का हिसाब भी आज बेहिसाब होगा.....

वाकई ....अपनी कमर कसते हुए ताई उन पर ब
अंधाधुन उन दोनों बदमाशों की धुनाई कर नही
औरत को कमजोर मत
समझ रे दुष्ट,तुझ जैसे बौरान
को भी नौ महीने तक अपनी कोख में
पालने की क्षमता रखती है औरत,
जिसे तुम सब माल समझते हो !
ओह ....
मैं तो गया
काम से...
मरने भी नहीं
ी और जीने
क भी नहीं
ी....तुम सबका
ल करूंगी...
अब बस
भी करो....
अभी तो हमारा
खेल शुरू हुआ
है बच्चू

भी कोई तीसरा बदमाश पीछे से ताई
दबोच लिया था,लेकिन ताई स्वयं को बचाते हुए
सने पर भी जोर का वार किया था।
ओह.....!
बाप रे....बाप चंडी के अवतार लग रही है....
ताई क्रोधित हो प्रचंड रूप धारण कर ली ।
लो बच्चू थोड़ा मजा तुम भी चख लो....
अब बख्श दो मेरी अम्मा !!

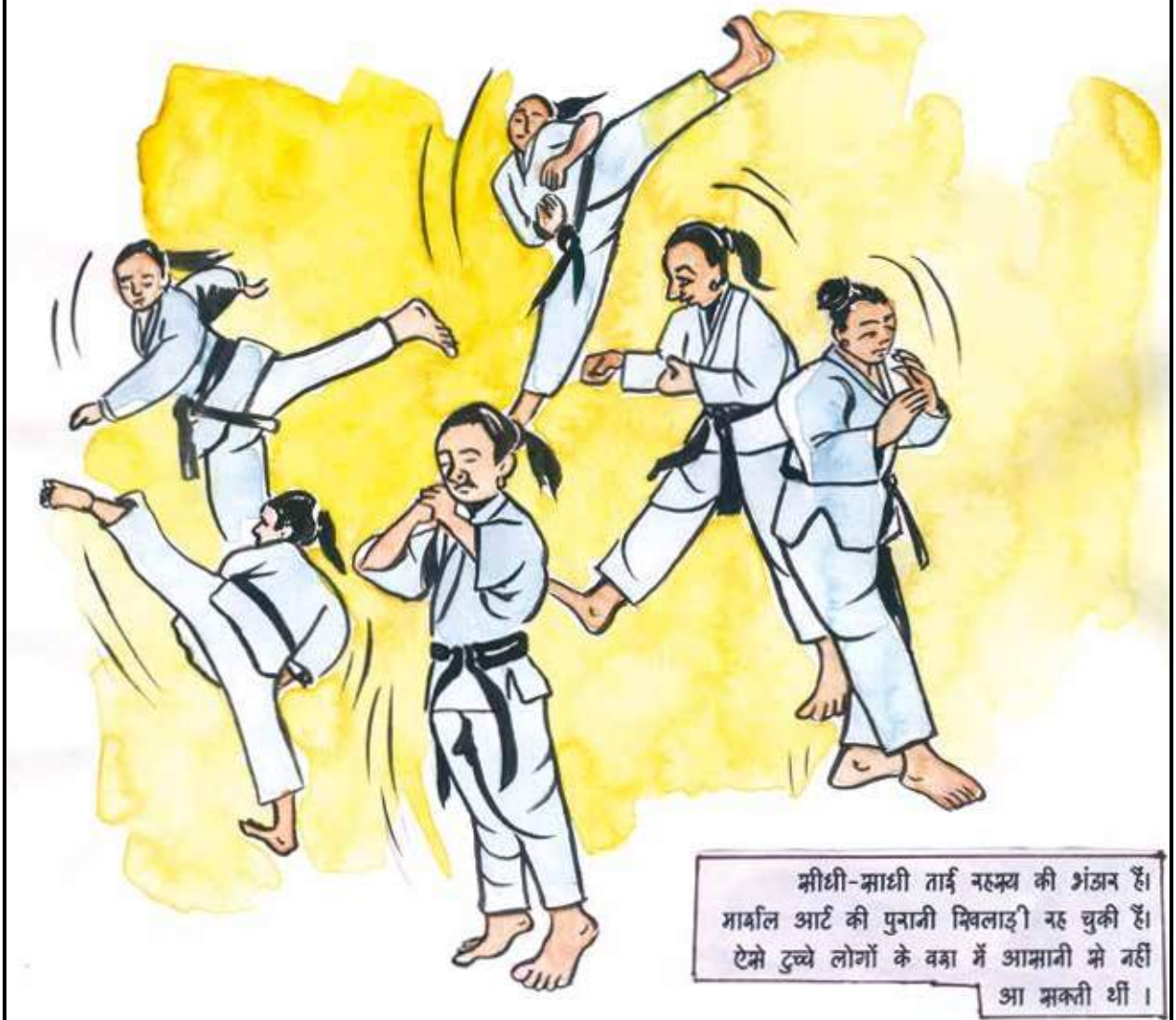

ताई के शक्ति प्रदर्शन देखकर बच्चे डर गये थे। अपराधियों की चीखें दिल दहला देने वाली थी।
सीधी-साधी ताई रहस्य की भंडार हैं। मार्शल आर्ट की पुरानी खिलाड़ी रह चुकी हैं। ऐसे टुच्चे लोगों के वश में आसानी से नहीं आ सकती थीं।

ताई बदमाशों को धुन भी रही थी और नसीहतें भी दे रही थी-

जंगली जानवरों,पक्षियों और पौधों की सुरक्षा के लिए बनाए गए भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अनुसार किसी जंगली जानवर को कैद करना,हत्या करना,उन्हें जहर देना,फंदा लगाना ,या फंसाना आदि का मतलब है शिकार करना ।

2003 में इस कानून को और ज्यादा सख्त कर दिया गया है.....अब कम से कम तीन साल के लिए सरकारी मेहमान बन कर जेल में चक्की पिसो और वहां की रोटी खाओ ।

संजय पुलिसवालों को लेकर आ गया था। पुलिसवालों के साथ वन विभाग के पदाधिकारी भी आये थे।

बदमाशों की धुनाई करने वाली महिला ही ताई है सर !

वन विभाग के पदाधिकारी और ग्राम थाना के प्रभारी दोनों ताई के साहसी कारनामें से बेहद प्रसन्न थे। ताई के कार्यों की सराहना कर रहे थे-
ताई, आप जैसे कुछ लोग और हो जाएं तो समाज से अपराध खत्म हो जाएगा..... आज बहुत बड़े गिरोह का पर्दाफाश हुआ है।
हमें इनकी तलाश बहुत दिनों से थी, मगर कभी हाथ नहीं आए। ये प्रकृति के सबसे बड़े दुश्मन हैं।
हाथियों पर गोलियां चलाने पर एक हाथी तो मर जाता था।
धमंधायं

लेकिन बाकी हाथी क्रोधित हो कर जंगल में कोहराम मचा देते थे। जंगल से सटे गांवों तथा खेत-खलिहान को रौंद डालते थे।
पुलिस वालों के द्वारा सभी बदमाशों को गिरफ्तार किया गया और बंधक बने सभी लड़के-लड़कियों को छुड़ाया गया।
ताई, आपको बहुत बहुत शुक्रिया....
वन पदाधिकारी व अन्य वनकर्मियों के द्वारा जंजीर से बंधे हाथी के बच्चे को भी मुक्त किया गया।
उस खंडहर रूपी मकान की पूरी तरह तलाशी लेने पर हाथियों के दांत और बाघों की खालें मिली थीं।
ओह! यह तो बहुत बड़ा कांड करने की योजना थी। समय रहते ताई की सहायता से हम सबको पता चल गया।
!?

पुलिस और वन पदाधिकारी के जाने के बाद ताई,संजय और बच्चों के साथ लौट रही थी ।
POLICE
अब हम लोग भी घर लौट चलते हैं ।
हां ताई....बिलकुल
लेकिन तुम सब से एक बात कहना चहूंगी,कभी भी ऐसी गलती मत करना । किसी तरह के प्रलोभन में मत पड़ना और बिना किसी अनुभवी आदमी को लिए जंगल नहीं आना । बिना वनकर्मी को साथ लिए जंगल घूमना खतरनाक होता है।

रोती-बिलखती मां से बच्चे को मिलाकर ताई बेहद खुश थी ।
मांऽऽऽ
मेरे लाल.....
काम पूरा करने के बाद ताई अपने घर की ओर लौट पड़ी ।
दूसरे दिन समाचार पत्रों में ताई छायी हुई थीं ।
उनके कारनामें से कुछ लोग प्रसन्न थे
तो कोई चकित था ।

1. जंगल में शिकार करना अवैध है।
2. जंगल में हरे-भरे पेड़ों की कटाई गैरकानूनी है।
3. जंगल में जंगली जानवरों को कोल्ड-ड्रिंक, चिप्स, चॉकलेट व बिस्कुट आदि खिलाना भी गैरकानूनी है, क्योंकि उनके शरीर के लिए ये चीजें हानिकारक है।
4. प्रवेश निषेध क्षेत्रों में प्रवेश करना गैरकानूनी है।
5. जंगल में जानवरों के साथ बर्बरता पूर्वक बर्ताव दंडनीय अपराध है।
6. जंगली जानवरों, पक्षियों व पौधों के लिए बनाये गये भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम का पालन सभी के लिए अनिवार्य है। कानून का उल्लंघन दंडनीय अपराध है।

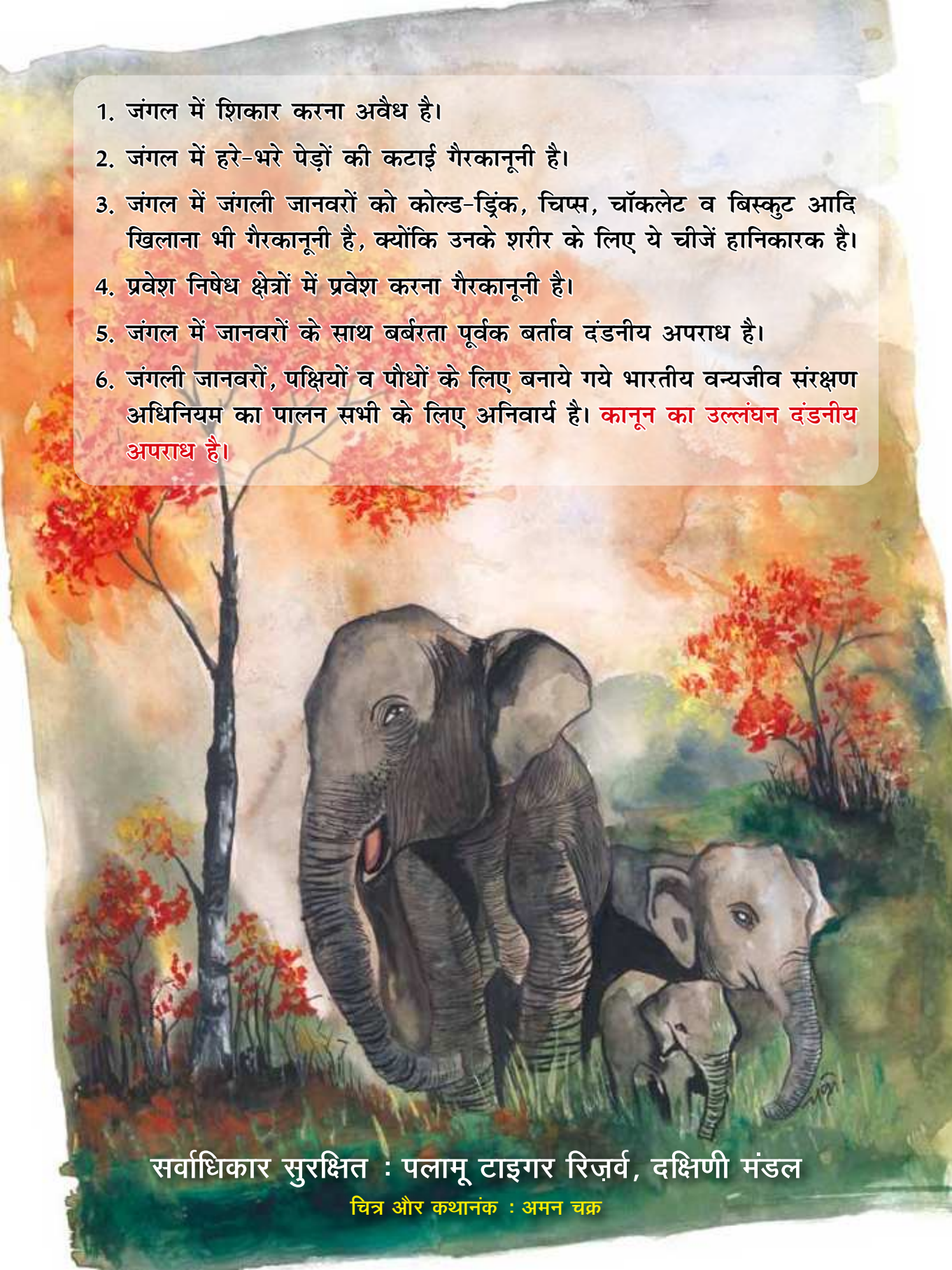

सर्वाधिकार सुरक्षित : पलामू टाइगर रिज़र्व, दक्षिणी मंडल

चित्र और कथानंक : अमन चक्र